Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 03/October/2023 IJRAW: 2023; 2(11):01-03 Accepted: 06/November/2023

वर्तमान समय में उभरते विश्व में छात्र, शिक्षक एवं शिक्षा की भूमिका

*[1]डॉ0 हरिकृष्ण

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बीकॉन इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

पहले हमारे देश में लोग सादा जीवन उच्च विचार वाले होते थे, मगर अब जीवन तो सादा रहा नहीं, विचार भी दिन प्रतिदिन गिरते जा रहे है। युग परिवर्तन संसार का नियम है। जैसे–जैसे हमारा प्यारा भारत वर्ष जीवन उपयोगी साधनों एवं उपसाधनों के निर्माण में विकसित होने की दिशा में तेजी से बढ़ता जा रहा है, वैसे–वैसे हमारे आचार–विचारों में भी दिन प्रतिदिन विपरीत दिशा में परिवर्तन आ रहा है। विश्व गुरू की सज्ञां वाला भारत, सोने की चिड़ियां कहलाने वाला भारत सांस्कृतिक उथल–पुथल व मूल्यों के भयानक दौर से गुजर रहा है। आज के वर्तमान समय अधिकांश युवा दूसरों को पीछे धकेल कर बहुत शीघ्रता से आगे बढ़ जाना चाहते है। हथेली पर सरसों जमाने की फिराक में, रातों–रात में ही कुबेर बनने की तीव्र इच्छा युवाओं को अनैतिक तरीके अपनाने को बाध्य करती है। यद्यपि आज व्यक्ति पहले से अधिक समृद्ध, शिक्षित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला है परन्तु वह कहीं अधिक स्वार्थी, लालची और आक्रामक हो गया है। वह अपने आपकों समाज से कटा हुआ पाता है। परिणाम स्वरूप दिन प्रतिदिन व्यक्ति भौतिकता प्रधान एवं आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। आधुनिक शिक्षा का वास्तविक जीवन या फिर सफल परिवेश से कोई मेल नहीं बैठता। आज जो शिक्षा दी जा रही है उसमें तकनीक एवं व्यवसाय आदि पर तो जोर दिया जा रहा है परन्तु यह व्यक्ति के आत्मोत्कर्ष व सामाजिक चिन्तन से पूरी तरह कटी हुई है। उसमें प्रकृति व समाज के साथ समरसता व्यक्ति में मानवीय मूल्यों का सम्प्रेषण, चरित्र निर्माण और पर्यावरण का सरंक्षण आदि पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता। आज जो शिक्षा दी जा रही है वह हमें मृगमारीचिका की भॉति मशीन की तरह एक अन्तहीन क्रिया में संलग्न कर देती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति सामाजिक दायित्वों और सरोकारों से करता जा रहा है और धन कमाना और उसका भोगना ही उसके जीवन का लक्ष्य बनता जा रहा है। वह दिषा हीन होकर भटक रहा है। आग की शिक्षा, शिक्षक एवं छात्र की भूमिका पर गालिब की यह पक्तियॉ एक दम सटीक बैठती है–"धूल लगी थी चेहरे पर, आईना साफ करता रहा"।

मुख्य शब्दः सामाजिक चिन्तन, शिक्षा, शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, छात्र की भूमिका।

प्रस्तावना

शिक्षा का स्तर इतना गिरा हुआ है कि परीक्षा पास करने वालों का ज्ञान भी शून्य समान है। तमाम शिक्षा संस्थानों में दीमक लगने के कारण देश का भवन जर्जर होता जा रहा है। इस क्षेत्र में सबसे बड़ा अभाव योग्य शिक्षकों का हैं जो व्यक्ति किसी अन्य क्षेत्र में रोजी रोटी नही कमा सकता, वह शिक्षा क्षेत्र में खप जाता है। महात्मा गॉधी इस समस्या से परिचित थे और उन्होंने विद्यापीठ की स्थापना की थी परन्तु गांधीजी के आदर्श तो उनके जीवन–काल में भी भंग हो रहे थे और स्वतंत्रता प्राप्त करने का समय उनकी विजय का समय था परन्तु मन ही मन वे जानते थे किवे असफल हो गए है।

शिक्षा के लिए संगमरमरी भवनों और उसके तामझाम पर किया गया खर्च व्यर्थ चला जाता है क्योंकि दोषपूर्ण पाठ्यक्रम और अयोग्य शिक्षक सबकुछ लील जाते है। स्कूल घर से दूर बने घर की तरह और घर स्कूल से दूर बने स्कूल की तरह होना चाहिए परन्तु घर महज चार दीवारी बन कर रह गए और स्कूल परीक्षा पास करने के गुर बताने वाले संस्थान बनकर रह गए। फिल्मकार प्रकाश मेहरा के भागीदार और उनकी सफलता की

*Corresponding Author: डॉ0 हरिकृष्ण

आधारशिला रखने वाले पॉल चौधरी के पुत्र ने परीक्षा में असफल होने पर आत्महत्या कर ली थी। उनकी शवयात्रा के मार्ग पर ही एक शिक्षा शास्त्री ने आकर बताया कि परीक्षा में त्रुटि रह गई थी। यह छात्र तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था। इस तरह वह आत्महत्या नहीं वरन् शिक्षा व्यवस्था द्वारा की गई हत्या थी। इस जघन्य अपराध में इस्तेमाल किया गया हथियार परीक्षा प्रणाली का खंजर था और हत्यारे ढीली व्यवस्था द्वारा प्रदान किए सफेद दास्ताने पहने थे ताकि खंजर पर कातिल की उंगलियों के निशान प्राप्त नहीं हो सकें।

अंग्रेजों द्वारा भारत में स्थापित शिक्षा का मकसद था क्लर्क और अफसर पैदा करना। अंग्रेजो ने 150 वर्ष तक भारतीय लोगों की सहायता से ही भारत पर हुकूमत की है। कभी भी पच्चीस हजार से अधिक अंग्रेज भारत में नहीं रहे और उन्होनें तैंतीस करोड़ लोगों पर शासन किया। गांधीजी के असहयोग आंदोलन ने इसी व्यवस्था को भंग कर दिया और अंग्रेजों ने भारत से चले जाना बेहतर समझा। वर्तमान में भी व्यवस्था पूरी तरह से थमी हुई है परन्तु हुक्मरान है कि डटे हुए है और कभी नहीं पूरा करने वाले वादों का ऐलान करते जा रहे है।

वेदव्यास कौरव व पांडवों को विद्या दान के लिए अपने आश्रम ले गए जो था ही नही। उन्होने अपने छात्रों से कहा कि वृक्ष काटें, नदी से जल लाएं और उनके आश्रम का निर्माण करें। सभी छात्र इस कार्य में जुट गए और आश्रम का निर्माण करने के बाद छात्रों ने कहा कि अब शिक्षा देना। वेदव्यास ने कहा कि आश्रम निर्माण प्रक्रिया ही असली शिक्षा है। अब आप सब महलों में लौटें परन्तु उसके पहले इस आश्रम को आग लगा दे क्योकि वे अपने भावी छात्रों से पुनः आश्रम बनवाएंगे। दुर्योधन ने सम्पत्ति में आग लगाने से इन्कार कर दिया परन्तु पांडवों ने गुरू की आज्ञा का पालन किया। इसी घटना में कुरूक्षेत्र का बीजारोपण हो गया क्योंकि सम्पत्ति के मोह के कारण ही वह सहारक युद्ध हुआ। हमारी शिक्षा व्यवस्था में वेदव्यास जैसे गुरू कहां से लाएंगे।

हमारे यहँ की जीवनशैली अर्थात् आचार–संहिता में ऐसी कौन–सी खराबी इस नई पीढ़ी को नजर आती है? क्यों आधुनिकता के नाम पर ये पाष्चात्य सभ्यता व संस्कृति की और खिचते जा रहे है। विलासिता से पूर्ण इस जीवनशैली को जीने के लिए आज हमारी युवा पीढ़ी किधर भटक गई है? इसका दोषी कौन है? विकास की आड में कौन सा पतन भरा पतझड युवाओं में आ गया है? वर्तमान समय के इस परिवर्तन को देखकर मन में अनेक प्रश्न उठते है। हमें विचार करना ही होगा कि किस प्रकार अपनी आने वाली पीढियों को इस बेकार की बाढ से बचाया जाए? क्योकि बाढ़ आने की आंषका हो, जो बाढ़ आने से पूर्व ही पुल बॉध देना चाहिए, नही तो जलप्रलय होती रहें।

भारतवर्ष की पावन स्थली उसकी रामणीय प्रकृति, शिक्षाप्रद सभ्यता, नवंरगी छटा बिखेरती दिव्य संस्कृति, समाज को बांधकर रखने वाली पवित्र परम्पराएं, जहॉ मर्यादा के स्वर मुखरित हों, नैतिकता की शिक्षा से समाज को प्रेम का संदेश देकर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती रही है, वहॉ आज इस परिवर्तन के कारण पर विचार करते है। तो पता चलता है कि आधुनिक षिक्षा के नाम पर हो रहा छलावा ही महारी संस्कृति को नष्ट कर रहा है।

10 मई, 2017 काक जस्टिन बीबर कनाडा से भारत में अपना हुनर दिखाने आया था, तो यहॉ के कुछ ज्यादा अंग्रेजी पढे–लिखे, अंग्रजी मानसिकता के गुलाम इन्डियन लोगों ने इसको देखने सुनने के लिए 70000 से 80000 रूपये तक टिकट पर खर्च किए और ये 10 मिनट में अरबों रूपया लेकर पढे–लिखे लोगों को बेवकूफ बनाकर चला गया। ये वही लोग है, जो किसी गरीब जरूरतमंद को 10 रूपये देने से पहले 10 सवाल पूछते है ओर जरूरी नहीं कि पैसे देंगे भी...। इस संस्कारहीन उज्जड़ बेतुके से लाख गुणा अच्छा तो हमारे यहॉ बस, ट्रेन आदि मे ढपली बजाने वाला गाता है। अब समझ में आया भारत इतना गौरवषील इतिहास रखने के बावजूद गुलाम कैसे रहा.....? ऐसे संस्कारहीन पढ़े–लिखे अनपढ़ों की बहुतायात की वजह से। विदेशी हमारे सत्य सनातन संस्कारों के दिवाने हुए जा रहे है और हम अपनी संस्कृति की तबाह करने पर तुले हुए है और ये सब कुछ हमारी ऑखों के सामने ही तो हो रहा है। इसलिए ऋषियों की सन्तानों समय रहते चेत जाओं नही तो बहुत बुरा समय आएगा, तब कुछ हाथ न लगेगा।

स्माज की उन्नति तथा विकास का आधार षिक्षा ही रहता है। शिक्षा के द्वारा समाज के सदस्यों को विकास होता है तथा समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। समाज इसी उद्देश्य से शालाओं तथा उच्च शिक्षण–संस्थाओं का विकास करता है। परन्तु इन शिक्षण–संस्थाओं का विकास करता है। परन्तु इन शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का आधार समाज की संस्कृति, परम्पराऍ, मान्यताऍ, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थितियॉ, समाज के सदस्यों को जीवन–दर्षन आदि रहते है। वर्तमान काल में विज्ञान तथा टेक्नॉलॉजी का विकास, औद्योगिक व्यवस्था की जटिलता एवं विकास, शिक्षा की मॉग, ज्ञान भण्डार की अत्यधिक वृद्धि लोकतत्र के विकास के फलस्वरूप शिक्षा में समान अवसर उपलब्धि पर बल आदि अनेक बातों का प्रभाव षिक्षा पर पडा है। फलस्वरूप शिक्षा के उद्देश्य भी इनसे समुचित रूप से प्रभावित हुए है। वर्तमान काल की स्थितियों तथा आवश्यकताओं के कारण शिक्षा में यह मॉग प्रभावकारी होती जा रही है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए–शारिरिक, मानसिक, आध्यामिक, नैतिक, संवेगात्मक आदि। फलस्वरूप शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में बाल–व्यवहार तथा विकास, समाज–विज्ञान, सांस्कृतिक जीवन विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों की सहायता लेना आवश्यक हो गया है। हम यह देखते है कि विभिन्न समाजों के सदस्य विभिन्न ढंग से सोचते–विचारों तथा जीवन जीते है। विभिन्न राष्ट्रों की समान, एक–सी समस्याओं के हल करने के ढंग भी विभिन्न होते है। फलस्वरूप शिक्षा के

उद्देश्य, व्यवस्था, संगठन, माँग, स्तर, समाज–शाला–सम्बन्ध आदि सभी विभिन्न समाजों में विभिन्न होते है। वास्तव में शिक्षा जीवन का एक अंश होता है, जिसे जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है। शिक्षा की व्यवस्था समाज अपने ढंग से विधिवत् रूप से विशिष्ट प्रभावों के विकास हेतु करता है। अतः यह समाज के जीवन, आवश्यकताओं, आदर्शों, मान्यताओं आदि से सम्बन्धित होती है। इसीलिए विभिन्न राष्ट्रों तथा समाजों के शिक्षा के उद्देश्य अलग–अलग या विभिन्न होते है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में पाठ्यक्रम का भावी विकास प्रचलित पाठ्यक्रम से पूर्णतः भिन्न होगा। इसमें न तो विषय की प्रधानता होगी और न पुस्तक की। भावी पाठ्यक्रम अनुभव–प्रधान होना चाहिए और साथ ही, इसके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति में ऐसी बौद्धिक क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए कि वह मानवीय गुणों एंव जीवन–मूल्यों के प्रति सदा समर्पित रहे। यह धुऑधार प्रचार का युग है। जन–संचार के विभिन्न माध्यमों–समाचार–पत्र, रेडियों, टेलीविजन, सिनेमा आदि का यह प्रयास है कि व्यक्ति वही सोचे जो वे चाहते है।

सामाचार–पत्र के सम्पादकीय को पढ़कर व्यक्ति अपनी राज बनाये, रेडियों पर वार्ता सुनकर वैसा ही कुछ सोचे तथा सिनेमा के माध्यम से जो कुछ उसे दिखाया जाता है वह ज्यो–का त्यों ग्रहण कर लें। यह स्थिति अत्यन्त साोचनीय है। हमें ऐसा पाठ्यक्रम बनाना होगा जो प्रत्येक व्यक्ति में नीर–क्षीर–विवके उत्पन्न कर सके, ताकि वह अपने स्वतन्त्र चिन्तन को बनाये रख सके। पाठ्यक्रम के भावी विकास में स्वतन्त्र चिन्तन को प्रधानता देनी होगी। यदि ऐसा न किय गया तो मनुष्य, मात्र एक यंत्र बनकर रह जाएगा।

पाठ्क्रम के भावी विकास के कतिपय आयाम है। इनमें से प्रमुख विष्वबंधुत्व एवं विष्व–सहयोग हो और लोग एक दूसरे देष में बिना रोकटोक के जा सकें। यह तभी सम्भव होगा, जबकि हम ऐसा पाठ्यक्रम बनायेगें जो मानव–मूल्यों को सर्वोच्य स्थान देगा और मैत्री, करूणा, सौहार्द, सहयोग एवं समता के आधार पर मानव के वैयक्तिव एवं सामाजिक व्यवहार का मूल्याकंन करेगा। अन्त में हमारा लक्ष्य भारतीयता के अनुरूप मानव मूल्यों से ओतप्रोत ऐसी शिक्षा व्यवस्था करना हो ताकि हम अपनी संस्कृति की अद्वितीय जड़ों को सींचते हुए भविष्य में अलग पहचान बनाने में सफल हो सके तथा भारत को विश्वगुरू का सम्मान पुनः दिलवा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. पचोरी पुनीता, जीवन में मानवीय मूल्यों का ह्रास, वर्ष 9 अंक 3, शिक्षा मित्र, मार्च 2017।
2. मलैया विद्यावती, इग्लैंड, अमेरिका, रूस और भारत में षिक्षा के उद्देश्य, वर्ष 10 अंक 7, नई शिक्षा पद्वति, जुलाई 2017।
3. शर्मा पुष्पा, पाठ्यक्रम एक प्रक्रिया वर्ष 10 अंक 7, नई शिक्षा पद्धति, जुलाई 2017।
4. चौकसे, जय प्रकाष, शिक्षा व्यवस्था के भवन में दीमक से जर्जर होता देष, दैनिक भास्कर, मार्च 14, 2018